

(ज्ञान भाषा और पाठ्यक्रम) / (Knowledge, Language and Curriculum)

ज्ञान का अर्थ (Meaning of Knowledge)

ज्ञान शब्द 'ज्' धातु से बना है, जिसका अर्थ 'जानना', 'साक्षात् अनुभव' / बोध और प्रकाश से माना जाता है।

"ज्ञान के अर्थ से किसी वस्तु की वास्तविक स्थिति की जानकारी प्राप्त करना कहलाता है।"

"ज्ञान और बोध दो समीप शब्द हैं। ज्ञान में सिर्फ वस्तु की सम्बन्धी प्राप्त करने से है, और बोध वस्तु की धारण से अध्ययन से होता है।"

ज्ञान से तात्पर्य ये भी है कि ज्ञेय और ज्ञाता के पारस्परिक सम्बन्ध से ही ज्ञान माना जाता है। मनुष्य अपनी चेतना के माध्यम से ही ज्ञान प्राप्त करता है। इसी प्रकार इन्द्रियों की चेतना को ज्ञान की संज्ञा दी जाती है।

ज्ञान का महत्व (Importance of Knowledge)

ज्ञान का मानव जीवन में अत्यन्त महत्व है। ज्ञान के अभाव में मनुष्य जीने की कल्पना भी नहीं कर सकता। वर्तमान युग में ज्ञान के विस्फोट के कारण ही इसकी महत्ता में अत्यधिक वृद्धि हुई है। ऐसे मनुष्य को तीसरा ज्ञेय ज्ञान को ही कहा गया है -

जैसे

P.T.O.

- ⇒ मनुष्य का मानसिक विकास ज्ञान के माध्यम से ही होता है।
- ⇒ शैक्षिक जगत और माहपात्रिक जगत के सम्बन्ध के लिए भी मनुष्य को अपने तीसरे क्षेत्र / ज्ञान की आवश्यकता पड़ती है।
- ⇒ भारतीय दर्शन के अनुसार - "ज्ञान मानव जीवन का सार है"।
- ⇒ ज्ञानी मनुष्य (ज्ञान को सम्बन्धित वाला) जानकर ही अपना तथा दूसरों का कल्याण करने में समर्थ होता है।
- ⇒ "ज्ञान शत्रु के बिना भ्रमृत है, बिना औषधि के रसायन है तथा किसी की अपेक्षा न रखने वाला ऐश्वर्य है।"
- ⇒ सुकरात के शब्दों में - "जिसके पास सच्चा ज्ञान होता है, वह सद्गुणी होने के सिवाय और कुछ भी नहीं हो सकता है।"
- ⇒ ज्ञान रूपी भ्रमृत ही मनुष्य को बोधगम्य बनाता है। क्योंकि ज्ञान चेतना है, ज्ञान शक्ति है।

ज्ञान के प्रकार (types of knowledge)

⇒ ज्ञान दो प्रकार का होता है।

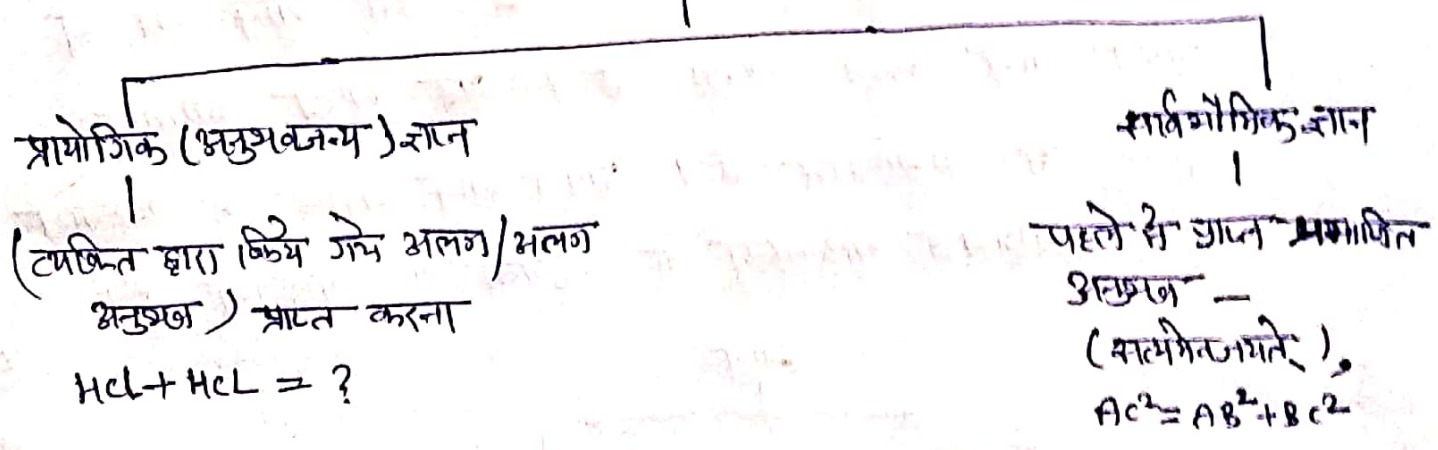
(1). प्रायोगिक (मनुभवजन्य) ज्ञान

(2). शक्तिमय ज्ञान

1. प्रायोगिक (अनुभवजन्य) ज्ञान :- अनुभवों के द्वारा प्रायोगिक ज्ञान प्राप्त किया जाता है। इस ज्ञान के हमें सूचनाएँ प्राप्त होती हैं। अन्य अर्थों में ऐसे निर्णय सार्वभौमिकता पर आधारित नहीं होते। इस ज्ञान को निरीक्षण तथा इन्द्रियगत और बाह्य जगत के अवलोकन मनुष्य को स्वयं के अनुभव से प्राप्त किया जाता है। इसलिए इन्द्रियों को ज्ञान का द्वार कहा जाता है।

2. सार्वभौमिक ज्ञान :- भौतिक शास्त्र के आधारभूत सिद्धांतों तथा गणित के सूत्र जैसे निर्णय जो पहले से ही सिद्ध किये गये हैं और व्यक्ति उन निर्णयों के द्वारा ही कार्य करते हैं। वह सार्वभौमिक ज्ञान होता है।

ज्ञान (knowledge)



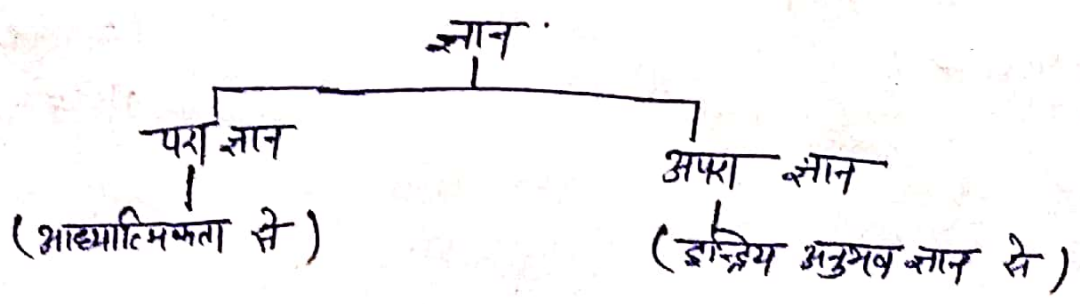
ज्ञान भारतीय दार्शनिकों की दृष्टि से दो प्रकार का होता है —

1. परा ज्ञान

2. अपरा ज्ञान

1. परा ज्ञान :- परमात्मा को जानना आदिगम का अन्तिम पड़ाव है, अर्थात् प्रकृति में आध्यात्मिकता की झलक पाना। यह बिना आध्यात्मिकता के विषय में ज्ञान से सम्बन्धित है। इस ज्ञान को मानव प्रकृति का सर्वोच्च ज्ञान माना गया है। यह ज्ञान व्यक्ति के स्वयं को जानने, आत्मा से और परमात्मा से सम्बन्धित ज्ञान है।

2. अपरा ज्ञान :- जो ज्ञान हम अपनी इन्द्रियों से और तर्क से प्राप्त करते हैं, उस ज्ञान को ही अपरा ज्ञान कहा जाता है। यह बाह्य भौतिक संसार से सम्बन्धित है। अपरा ज्ञान जगत के विचारों और अनगिनत मस्तिष्कों के अनुभवों का परिणाम है।



Signature
Parveen
Raj